पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

समाज
विकास
शिक्षा
पर्यावरण
युवा
मूल्य
राजनीति
महिला
संस्कृति
समाधान

समाज
साहित्य
संस्कृति
विकास
नई पीढ़ी
बेहतर कल

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

रचनाकार :-
पद्मा मिश्रा

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन, वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका – पद्मा मिश्रा

पत्रकारिता के सामाजिक सरोकार

पत्रकारिता के सामाजिक सरोकार

समाज के विस्तृत फलक पर दिन-प्रतिदिन चित्रित होती हुई जीवन की विविध अभिव्यक्तियों एवं आस-पास की घटनाओं पर एक शोधपरक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हुई एक मुखर आवाज़ है—पत्रकारिता।

वस्तुतः पत्रकारिता जन-भावनाओं एवं यथार्थ की सहज अभिव्यक्ति का माध्यम तो है ही, वह सामाजिक मुद्दों का यथार्थवादी व सजीव चित्रण कर पाने में भी मुखर होती है। पत्रकारिता समाज का दर्पण भी है, जिसमें प्रतिबिंबित होते व बदलते सामाजिक मूल्यों, घटनाओं एवं सामाजिक सरोकारों का सही-सही मूल्यांकन संभव हो पाता है।

पत्रकारिता एक दायित्व भी है, जिसकी पूर्ति समाज में ही हो सकती है। यह समाज से विमुख रहकर केवल काल्पनिक सच्चाइयों एवं नकली बाज़ारवाद के बल पर कभी पनप नहीं सकती। मेरे विचार से वह सच्ची पत्रकारिता भी नहीं है, जो केवल उपभोक्तावादी संस्कृति को बढ़ावा देती हो। हाँ, समाज के बदलते स्वरूप से उसे प्रभावित होना ही पड़ता है, यह मैं मानती हूँ।

भारत एक लोकतांत्रिक राष्ट्र है और लोकतंत्र का सही अर्थ महज़ सम्पूर्ण आज़ादी से नहीं लिया जाता, क्योंकि बिना सूचना क्रांति के लोकतंत्र बेमानी है।

'हंस' के संपादन काल में प्रेमचंद का यह मानना था कि, "पत्रकारिता एक मिशन की तरह होनी चाहिए, जो अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वाह पूरी निष्ठा से कर सके।" वस्तुतः पत्रकारिता निर्भीक, निडर व निष्पक्ष होनी चाहिए। घटनाओं को उनके सही-सही विवेचन एवं निष्कर्ष के साथ प्रस्तुत कर समाज को एक संदेश देना भी पत्रकारिता का प्रधान नियम है।

"यह नीड़ मनोहर कृतियों का, यह विश्व बना रंगस्थल है, है परंपरा लग रही यहाँ, ठहरा जिसमें जितना बल है।"

पर सच्ची पत्रकारिता इस होड़ में न उलझकर समाज के प्रति निहित कर्तव्यों का निर्वहन कर सके, तभी उसका महत्त्व है, अन्यथा नहीं।

हमारे सामने गणेश शंकर विद्यार्थी, लाला लाजपत राय, तिलक, शिवप्रसाद गुप्त, विष्णु पराड़कर जैसे उदाहरण हैं, जिन्होंने पत्रकारिता को एक नई दिशा प्रदान कर ज्वलंत क्रांति व चेतना का सूत्रधार बनाया था और अंग्रेज़ी प्रशासन की नींव हिला दी थी। दबे-कुचले मानसिकता को पाले भारतीयों की धारा ही बदल दी थी।

हमारे समाज में व्याप्त दहेज़ हत्याओं, कन्या भ्रूण हत्याओं, नारी उत्पीड़न के खिलाफ चल रहे आंदोलनों को मीडिया की शक्ति ने ही सफलता के शीर्ष पर ले जाने का कार्य किया है। आज ये ज्वलंत मुद्दे पत्रकारिता की मदद से ही जनसमर्थन और चर्चा का विषय बने हैं। पत्रकारिता भी कई मुद्दों पर भारतीय महिलाओं और सामाजिक संगठनों के साथ कदमताल कर रही है। संघर्ष की राह में हम अकेले नहीं हैं, यह भी उन्होंने सिद्ध किया है।

परंतु उल्लेखनीय बात यह है कि केवल फैशन, ग्लैमर या बाज़ारवाद से उपजी उपभोक्ता संस्कृति पर आधारित खबरों को ही हम सच्ची पत्रकारिता नहीं कह सकते। बल्कि अपनी सच्ची खबरों, सही आकलनों, खोज और निष्कर्षों के आधार पर जनता की आवाज़ बनना ही सच्ची पत्रकारिता है।

चाहे वह नितीश कटारा कांड हो या हेतल धनंजय कांड, राजीव गांधी की हत्या से उपजे मर्मांतक सवाल हों या चौरासी के दंगों से लेकर पाकिस्तान में सरबजीत की फाँसी का मामला हो, पत्रकारों ने अपनी भूमिका का सार्थक निर्वाह भी किया है।

अभी हाल ही में घटित आरुषि हत्याकांड के परिप्रेक्ष्य में यह भूमिका शायद सही ढंग से नहीं निभाई गई। वह पुलिस, प्रशासन व सामाजिक दबाव का शिकार होकर रह जाती, यदि पत्रकारों ने स्वयं आगे आकर, एक अभियान के तहत सही रास्ता नहीं दिखाया होता। यहाँ इसका सार्थक पहलू यह रहा कि इस कांड से जुड़े सभी तथ्यों, गवाहों और परिस्थितियों से पूरा देश अवगत हो सका।

कभी-कभी पत्रकारिता संकलित आकलनों और सूचनाओं का प्रस्तुतीकरण बनकर रह जाती है। बार-बार एक ही समाचार को चटपटे ढंग से जनता के सामने इस तरह परोसना कि जनाक्रोश बढ़ जाता है, नारेबाज़ी, गुटबाज़ी, आरोपों-प्रत्यारोपों की झड़ी लग जाती है। कुछ दिनों तक मुद्दे गरमाए रहते हैं, फिर एक शांति—तूफान से पहले की शांति।

परंतु कुछ पत्रों एवं दृश्य मीडिया ने सचमुच अपनी जिम्मेदारी निभाई है। उन्होंने एक नई चेतना का निर्माण किया है, सामाजिक सरोकारों में पत्रकारिता के नए मानदंड तलाशे हैं। वे निश्चित रूप से साधुवाद के पात्र हैं।

"दो राह, समय के रथ का घर-घर नाद सुनो।"

समय सचमुच तेजी से बदल रहा है। जन-मन की कातर पुकार, उनकी समस्याओं, सामाजिक मुद्दों से जुड़े सवाल, आतंक, अनाचार, गरीबी, दहेज़ जैसी बुराइयों के खिलाफ भी पत्रकारिता की आवाज़ उठी है, जिससे आज जनता की आवाज़ को दबा पाने का साहस किसी में नहीं रह गया है।

आज की कर्मठ पीढ़ी भी समाज के विकास का आधार पत्रकारिता को ही मानती है।

"मैं एक आवाज़ हूँ, आने वाले 'कल' की, समय के पृष्ठों पर अंकित, पढ़ो मेरी कहानी।"

- पद्मा मिश्रा

लेखक परिचय

नाम – पद्मा मिश्रा

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....**पद्मा मिश्रा**.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...